मासिक पत्रिका

यौगिक प्रवचन

अंक ११६ अप्रैल ८२

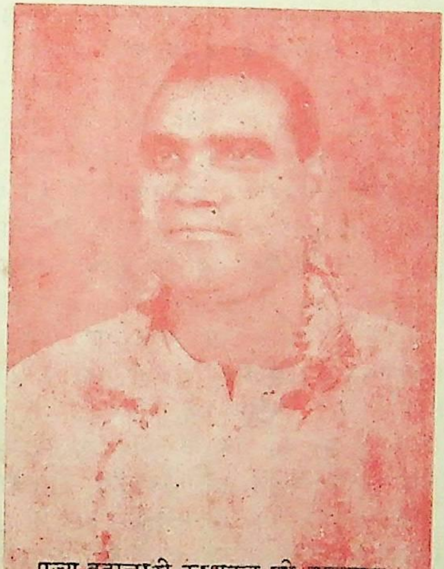

पूज्य ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी महाराज

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि०)

III-ई-31, लाजपत नगर, नई दिल्ली-११००२४

मूल्य प्रचारार्थ केवल ५० पैसे दूरभाष : 698873

बैजनाथ सहगल मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक द्वारा वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि०) के लिए कृष्णा प्रिंटर्स, १६८/४६, रमेश मार्किट, नई दिल्ली-११००६५ में मुद्रित ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

धन्यवाद

श्री मनोहर लाल जी अग्रवाल कलकत्ता निवासी (हमारे सबसे पहले आजीवन सदस्य) समय-समय पर इस समिति के प्रकाशन कार्य में सहायता देते और दिलवाते रहते हैं। ११ दिसम्बर १९८१ को उनकी सुपुत्री का शुभ विवाह श्री नगर दिल्ली में हुआ। अग्रवाल जी ने ब्रह्मचारी महाराज के आशीर्वाद के बिना यह कार्य अधूरा समझते हुए उनसे इस विवाह पर पधारने का अनुरोध किया और वह १० दिसम्बर को उनके यहां पहुंच गए। १० और ११ दिसम्बर दोनों दिन उनके प्रवचन हुए। अग्रवाल जी ने इस अवसर पर जहां ब्रह्मचारी जी महाराज की यथा शक्ति सेवा की और यज्ञ के लिए २ कनस्तर घी दिया वहां एक प्रवचन छपवाने में इस समिति की २५०-०० से सहायता की। हमने यही उचित समझा कि इस सहायता से इस अवसर पर दिये गए प्रवचन ही छापे जावें वह दोनों प्रवचन आपकी सेवा में भेजे जा रहे हैं। हम और आप अग्रवाल जी को बधाई देते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह देव इस जोड़ी को सदा बनाये रखें और उनका गृहस्थ जीवन सुखमय व्यतीत हो। साथ ही हम यह भी आशा करते हैं कि अग्रवाल जी आगे भी इसी प्रकार प्रकाशन कार्य में हमारी सहायता करते और करवाते रहेंगे।

सूचनायें एवं नम्र निवेदन

पुस्तक नं० ३८ और अतीत का दिग्दर्शन भाग-३ [ऐतिहासिक खण्ड-मूल्य १६-००] बरनावा यज्ञ पर थोड़ी मात्रा में ही दफ्तरी दे सका था। बाकी की प्रतियां अब मिल गई हैं और वह धीरे-धीरे इस मास में उन सदस्यों को जो यज्ञ पर नहीं आ पाए थे भेजी जावेंगी। पुस्तक नं० ३८ तो वार्षिक

C-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

और आजीवन सदस्य दोनों को भेजी जावेंगी। परन्तु अतीत का दिग्दर्शन भाग-३ केवल आजीवन सदस्यों को ही निःशुल्क भेजी जावेंगी। वार्षिक सदस्यों को यह भाग १२-०० अर्थात् २५% कम पर मिलेगा। चूंकि पुस्तक की साधारण डाक से भेजने में रास्ते में गुम हो जाने की अधिक सम्भावना है इसलिए आजीवन सदस्यों को यह पुस्तक पहली पुस्तकों की भांति ़-०० के वी० पी० पी० के रूप में भेजी जावेगी जिससे यह सुरक्षित उन तक पहुंच सके।

बरनावा यज्ञ से आते ही यौगिक प्रवचन नं० ११५ (मार्च ८२) भेजना था इसलिए उसमें कुछ लिखने के लिए समय नहीं था। मैं अब उन सब सदस्यों से क्षमा प्रार्थी हूं जिनसे पिछले दो तीन दिन कार्य में अति व्यस्त होने के कारण ठीक प्रकार से बात भी नहीं कर सका। यह आपस में मिलने का बहुत सुन्दर अवसर होता है और समिति के कार्य को आगे ले जाने के लिए आपस में वार्तालाप और सुझाव आदि प्राप्त किए जा सकते हैं। जो सज्जन प्रारम्भ में पधार जाते हैं उनसे ता समय-समय पर परामर्श हो ही जाता है परन्तु अन्तिम दिवस आने वाले तो शायद मेरे बारे में कोई गलत धारणा ही बना कर न ले जाते हों। मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि वह मेरी उस दिन की हालत देखते हुए मुझे गलत न समझें। जो सदस्य उस दिन काफी समय तक मेरा सहायता करते रहे उनका मैं बहुत आभारी हूं। यत्न किया जावेगा कि अगले यज्ञ पर हम कम से कम तीन व्यक्ति आपकी सेवा के लिए पहुंचे जिससे कोई असुविधा न हो। इस बार की असुविधा के लिए क्षमा चाहूंगा।

दिव्य औषधि

डाक्टर कमलसिंह जी उज्जैन निवासी इस समय ८१ वर्ष के हैं परन्तु इतनी आयु में भी वह १७ घंटे तक कार्य करने का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्षमता रखते हैं और स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छी है। इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि पूज्य ब्रह्मचारी जी के प्रवचनों में अनेक दिव्यौषधियों के नाम के साथ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत का नाम भी आया है जिनका सेवन महानन्द जी ने भी किया था जिनके गुणों से आजका मानव अनभिज्ञ है। ६० वर्ष की खोज के पश्चात् विन्ध्याचल पर्वत से एक दिव्य औषधि प्राप्त कर वह सेवन कर रहे हैं जिसका प्रभाव बुद्धि, स्मृति, त्वचा आदि पर आश्चर्यजनक हो रहा है। वह इस लुप्त बिद्या को पुनः जागृत करने के लिए १०-१५ व्यक्तियों पर जो समृद्ध, धार्मिक और संयमी हों, प्रत्यक्ष अनुभव कराना चाहते हैं। इच्छुक सज्जन उनसे सीधा पत्र-व्यवहार कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उनका पता इस प्रकार है :—

डा० कमल सिंह
८, बहादुरगंज, उज्जैन (म० प्र०)

आजीवन सदस्य

फरवरी व मार्च ८२ में निम्नलिखित सज्जन आजीवन सदस्य बने हैं। उनसे जो राशि प्राप्त हुई है उससे हम इस स्थिति में हो गए हैं कि अपने समाप्त पुष्प अधिक से अधिक छपवा सकें। इस रूप में सहायता के लिए हम उनके आभारी हैं और दूसरे वार्षिक सदस्यों से प्रार्थना करेंगे कि वह भी उनसे प्रेरणा लें और शीघ्र ही आजीवन सदस्य बनें। आजीवन सदस्यता शुल्क अपनी सुविधानुसार किश्तों में भी दिया जा सकता है।

श्री आर०के० भारद्वाज, नई दिल्ली-१६, श्री अजीत सिंह छिंदवाडा (M.P.), श्री नरेश चन्द्र, नांगल, श्रीमती दमयन्ती सैम्भी चन्दीगढ़, श्री हीरा लाल आजमगढ़, श्री ब्रह्मानन्द सहजवाल दिल्ली-५१, श्री आदित्य कुमार त्यागी तौली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म्

कन्या-याग

स्थान : अग्रवाल धर्मशाला, त्रिनगर।
दिनांक १० दिसम्बर, १९८१
समय : दोपहर ३ बजे।

जीते रहो !

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगाण गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा प्रतिभा-शाली है। ज्ञान और विज्ञान में रमण करने वाला है। जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है वह मेरा देव विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान काल तक कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वह सीमा से रहित है। सीमा में आने वाला नहीं है। आज हम जब बेटा ! इस ब्रह्माण्ड के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ करने लगते हैं तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात आने लगता है कि उस मेरे देव का कितना अनुपम ब्रह्माण्ड है जिसके ऊपर विज्ञानवेत्ता अनु-सन्धान करते रहते हैं। कोई नवीन अनुसन्धान नहीं कर पाता। क्योंकि परम्परागतों से ही इस विज्ञान के ऊपर मानव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उड़ान उड़ता, नाना लोक-लोकान्तरों में जाना, जलों के ऊपर और अग्नि आभाओं को जानना मानवीय मस्तिष्कों में यह ज्ञान और विज्ञान रमण करता रहा है।

मेरे प्यारे ! हमारे यहां महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपनी विज्ञानशाला में विराजमान होते रहे हैं और यह सदैव विज्ञान के ऊपर जहां उनका अनुसन्धान रहा है वहां आध्यात्मिकवाद में और मानवीय कर्म-काण्ड में महान् विशेषज्ञ रहे हैं। मुझे उनका जीवन जब स्मरण आने लगता है तो प्रायः हृदय गद्-गद् हो जाता है। वह ब्रह्मवेत्ता थे, विज्ञानवेत्ता थे। बेटा ! एक समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने सूर्य की परिक्रमा वाले एक मन्त्र का निर्माण किया था जिस यन्त्र में सूर्य की नाना प्रकार की किरणों को ले करके और उसमें जो धाराएं हैं उन धाराओं को जानते हुए ऋषि ने वह यान निर्धारित किया जो सूर्य की परिक्रमा करता था। मुनिवरो ! सूर्य की रश्मियों से भी वाहनों का गमन होता रहा और होता रहता है। जब मानव अनुसन्धान करता है अथवा विचार-विनिमय करता ही रहता है तो मुनिवरो ! तीव्र इच्छा होने पर मानव को उसमें सफलता प्राप्त हो जाती है। वह विज्ञान में इतने पारायण रहते थे कि वैज्ञानिकों को शिक्षा प्रदान करते रहते थे। ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी गार्गपथ्य, ब्रह्मचारी रोहिणी केतु, ब्रह्मचारी स्वेणाकृत ऋषि महाराज, ब्रह्मचारी सोमकेतु, ब्रह्मचारी रोहवृणात, मेरे प्यारे ! नाना वैज्ञानिक उनकी विज्ञानशाला में शिक्षा पाते रहे। परन्तु जहां वह विज्ञानवेत्ता इतने पारायण थे, जहां वह ब्रह्मवेत्ता थे, राजा जनक की सभा में बेटा ! आत्मा-परमात्मा की उड़ान उड़ते रहते थे। आत्मलोक की चर्चाएं करते रहते थे। आत्मा क्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है ? आत्मा में जो ज्ञान की प्रतिभा है वह आत्मा का स्वाभाविक गुण माना गया है। ऋषि-मुनियों ने बहुत अनुसन्धान किया इस सम्बन्ध में, जहां वह विज्ञानवेत्ता आध्यात्मिक विज्ञान, गृह-रुद्रों की चर्चा करते रहे हैं वहां वह कन्या याग नाना प्रकार के यागों का चलन भी करते रहे हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जहां बेटा ! नाना प्रकार के यागों का चलन किया है वहां जैसे गो-मेध याग है, अश्व-मेध याग है, अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है, देवी याग है, विष्णु याग, रुद्र याग, ब्रह्म याग, नाना प्रकार के यागों का उन्होंने वर्णन किया। परन्तु जहां नाना प्रकार के यागों का चलन किया है वहां बेटा ! एक याग है जिसे अश्वमेध कहते हैं। वही मुनिवरो ! अजयमेध कहा गया है। नाना प्रकार के यागों का चलन हमारे वैदिक साहित्य में प्राय: प्राप्त होता रहा है।

मेरे प्यारे ! वहां यागों का चयन करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक कन्या याग का वर्णन किया है। नाना यागों में कन्या याग का भी अपने स्थान पर एक महत्त्व माना गया है। परन्तु कन्या कहते किसे हैं ? और कन्या याग क्या है ? वेद के ऋषियों ने इसके ऊपर अनुसन्धान किया। वेद में आया कि कन्या याग होना चाहिए। वेद का ऋषि कहता है, मन्त्र आता है कि कन्या सबसे प्रथम देव लोक में रहती है। उसके पश्चात् कन्या पितृ-लोक में रहती है। उसके पश्चात् वह पति लोक को प्राप्त हो करके वहां याग करने का अधिकार प्राप्त होता है। ऐसा वेद का ऋषि कहता है बेटा ! हम नहीं कहते। वेद का आचार्य कहता है। याज्ञवल्क्य मुनि कह रहा है। वह कहता है कि कन्या प्रथम देवलोक में रहती है बेटा ! कन्या का जब बाल्यपन होता है, देवलोक के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संरक्षण में होता है। देवता उसकी रक्षा करते हैं। देवता कौन है? देवलोक किसे कहते हैं ? जहां देवता मानव की रक्षा करते हैं। मानव की रक्षा मानव ही नहीं कर रहा है। देवता उसकी रक्षा करते हैं। जैसे कन्या के प्रथम जीवन में बेटा ! देवता रक्षा करते हैं। वह नग्न है। न उसे वस्त्रों का ज्ञान रहता है। वह सदैव अपने में ब्रह्मवत् को प्राप्त होती रहती है अपने में देववत को प्राप्त होती रहती है। उसकी देव-प्रवृति ही उसकी रक्षा करती रहती है। परन्तु द्वितीय लोक है पितृ-लोक बेटा ! जब कन्या युवा होने लगती है तो उसकी संरक्षणता पितृ लोक कहलाता है। पितृ उसे शिक्षित बनाते हैं। अहा ! वह आचार्य को अपना पितृ बना करके शिक्षा में महान् बना करती है। मुझे स्मरण आता रहा है बेटा ! वहुत पुरातनकाल में मनु वंश की चर्चा आती है। हमारे यहां एक माता मदालसा सतोयुग के काल में हुई। माता मदालसा को बाल्यकाल में पितृ ने आचार्य कुल में प्रवेश कराया। क्योंकि आचार्य भी पितृ होते हैं। आचार्यकुल में जब प्रवेश हुआ तो माता मदालसा का अध्ययन का विषय था परमाणुवाद। कि मैं संसार में यदि गृहस्थ में जाऊंगी तो मेरा क्या-क्या कर्त्तव्य है ? सदैव वह वेद की चर्चाएं जो वैदिक साहित्य में आती हैं उनको अध्ययन करती रहती थी। एक समय बेटा ! माता मदालसा अध्ययन कर रही थी कि यदि मैं गृह में प्रवेश करूं और मेरे गर्भस्थल से बाल्य का अथवा पुत्र का जन्म हो तो मैं इस संसार में तेरी आभा में जो मानव रमण कर रहा है, मान में, अपमान में इस समाज में जो अपने मानवीयता को व्यतीत करता है वह पशु तुल्य जीवन होता है। मैं यह चाहती हूं मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला ब्रह्मचरिष्यामि बाल्य हो, वह इस संसार से उपराम होना चाहिए। उसे विवेक होना चाहिए। मैं कैसे अध्ययन-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शील बनूं और कैसे मेरा यह कर्म बने ? बेटा ! वेद में नाना प्रकार की विद्याएं आती हैं। उनको वह अध्ययन करने लगी। आयुर्वेद में उसकी परायणता को दृष्टिपात करके महर्षियों ने बेटा ! उसको धन्य-धन्य कहा।

मुझे स्मरण है बेटा ! एक समय जब माता मदालसा अध्ययन करती थी तो उनके विद्यालय में एक समारोह हुआ। उसमें नाना ऋषि, कुछ ब्रह्मवेत्ता, कुछ ब्रह्मजिज्ञासु भी विराजमान हुए। मुनिवरो ! उस समारोह में माता मदालसा जब वार्ता प्रकट करने लगी तो माता मदालसा ने यह कहा कि मेरी इच्छा यह है, अब मैं पितृकाल में विद्यमान् हूं। मेरा जिस काल में पति लोक प्राप्त होगा, उस समय यह संसार को जानने के लिए मेरा यह निश्चय हुआ है कि मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला सन्तान इस संसार से उपराम होना चाहिए अथवा वह ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए। माता मदालसा उस समारोह में वार्ता प्रकट कर रही थी। यह उच्चारण कर रही थी, संसार में मेरी पुत्रियों को यह विचारना चाहिए कि कैसे अपने जीवन को व्यतीत करना है ? त्याग और तपस्या से राष्ट्र और समाज को ऊंचा बनाना है। इस समाज को ब्रह्मवेत्ता की आवश्यकता रहती है। यह समाज केवल द्रव्य से ही ऊंचा नहीं बनता है। यह राष्ट्र है, जो समाज है, यह ऊंचे-ऊंचे भवनों से ऊंचा नहीं बनता है। यह उस काल में ऊंचा बनता है जब कि ब्रह्मवेत्ता आचार्य होंगे और ब्रह्मचर्यवेत्ता आचार्य ही इस संसार को ऊंचा बना सकते हैं। क्योंकि संसार में प्रत्येक स्थलियों पर विवेक की आवश्यकता रहती है। विवेक होना चाहिए। माता मदालसा यह समारोह में प्रकट कर रही थी। मेरे प्यारे ! पितृजन, आचार्यजन यह उच्चारण कर रहे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

थे कि हे देवी ! जो यह वाक्य उच्चारण कर रही हो क्या यह समाज विवेकी पुरुषों से ही ऊंचा बनता है ? उन्होंने कहा अवश्य बनता है। विवेकी ही पुरुष राजा को मार्ग दर्शाते हैं। विवेकी पुरुष ही गृह को मार्ग दर्शाने वाले होते हैं। विवेकी पुरुष ही इस संसार में ऊंची उड़ान उड़कर के लोक-लोकांतरों की यात्रा करते हैं। विवेकी पुरुष ही आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बन करके, आत्मा के समीप जा करके परमात्मा को प्राप्त करते हैं जहां अनन्तमयी प्रकाश को प्राप्त करके मानव अपने जीवन को ऊंचा बनाता है। माता मदालसा की वार्ता को पान करने के पश्चात् ऋषि-मुनि बेटा ! मौन हो गए। उन्होंने कहा धन्य है पुत्री ! उन्होंने कहा न यही विवेकी पुरुष ही संसार में निर्भयता को प्राप्त होता है। मुझे स्मरण आता रहता है जब माता मदालसा अध्ययन किया करती थी, उनेक आसन पर सर्पराज आते, सिंह राज आते और उनके वेद-मन्त्रों की ध्वनि को बेटा ! वह श्रवण करते रहते थे। मेरे प्यारे ! माता मदालसा ने कहा कि मैं यह चाहती हूं कि मेरा जीवन महान् बने। मुझे स्मरण है माता मदालसा कहती थी कि मेरी माता सदैव अध्ययन करती रहती थी। वह वेदों की ध्वनि गाती थी वेद के मन्त्रों की ध्वनि जब मानव जटा पाठ में गाता है, घण पाठ गाता है, उदात्त पाठ, माला पाठ में जब वेदों की ध्वनि उच्चारण होती है तो विवेकी जो पुरुष होता है, मानव होता है, मेरे प्यारे ! सिंह भी उसके चरणों में ओत-प्रोत हो जाता है। परिणाम क्या ? मेरे प्यारे ! निर्भयता की आवश्यकता है। निर्भयता संसार को ऊंचा बनाती है। निर्भयता ही मानव को राष्ट्र से उपराम कर देता है। निर्भयता ही एकता के सूत्र में मानव को कटिबद्ध कर देता है। निर्भयता ही मानव को देवलोक में पहुंचा देता है। निर्भयता ही मेरे प्यारे ! नाना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लाक-लोकान्तरों की यात्रा करने लगता है। मैं अपना विचार देता हुआ दूरी न चला जाऊं। समारोह समाप्त हो गया।

एक समय वह अपने आचार्य के समीप विद्यमान हो गई और आचार्य से कहा मैं अपने जीवन में गृह में प्रवेश करना नहीं चाहता मेरे प्यारे! आचार्य पोलुक ऋषि महाराज ने कहा, हे पुत्री! जैसी तुम्हारी इच्छा हो। परन्तु माता मन्दालसा जब युवा और हुई तो एक समय पुनः अपने आचार्य के चरणों में विद्यमान हो गयी और उन्होने कहा कि यदि मैं गृह में प्रवेश करूं तो मेरी स्वेच्छा से ही संतान का जन्म होना चाहिए। क्योंकि पितृ लोक से जब मैं पति लोक को प्राप्त होऊंगी तो मेरा ज वन महान् होना चाहिए और मैं चाहती हूं मेरी इच्छा से सन्तान का जन्म हो और पांच वर्ष तक मेरी ही शिक्षा होनी चाहिए। मेरे प्यारे! यही हुआ। मंगलम् प्रवे: ऋषि ने कहा यही होगा। उनकी चर्चाओं को श्रवण करके मदालसा का जीवन व्यापक बन गया। राजा-महाराजा सब उनके विचारों को श्रवण करने जाते थे। कुछ समय के पश्चात् मनु वंश में एक राजा हुए स्वन्त आनन्तु मनु महाराज और उसके पिता राज दे करके संयास को प्राप्त हो गए। परन्तु वह राजा बने तो उन्होंने विचारा कि अब संस्कार भी होना चाहिए। उन्होंने बेटा! पोलक ऋषि महाराज से यह प्रार्थना की कि यह तुम्हारे विद्यालय में कन्या जा शिक्षा पाती है इनका संस्कार हाना चाहिए। उन्होंने कहा, तुम मदालसा से प्रश्न करो। राजा कन्या के द्वार पर पहुंचे। उन्होंने कहा, हे देवी! मैं अपना-संस्कार और अपने गृह को पवित्र बनाना चाहता हूं तुम्हारे कर कमलों द्वारा। मेरे प्यारे! मदालसा ने कहा, हे राजन! मुझे स्वीकार है। परन्तु मेरी कुछ वार्ताएं हैं मैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संकल्पबद्ध हूं और संकल्पबद्ध ही रहूंगी। राजा ने कहा देवी। जो तुम्हारी इच्छा है। तो उन्होंने कहा, मैं जब गृह में प्रवेश करूं तो मेरी स्वेच्छा से सन्तान का जन्म हो। राजा ने उस वाक्य को स्वीकार किया। उन्होंने कहा पांच वर्ष तक मेरी शिक्षा होनी चाहिए उस बाल्य को। उन्होंने कहा हे देवी! जैसी तुम्हारी इच्छा हो। यह वाक्य स्वीकार कर लिए। राजा और मदालसा ऋषि के द्वार पर पहुंचे और ऋषि से कहा हम दोनों ने विचारों को कटिबद्ध कर लिया है। संकल्पमय बना लिया है। मेरे प्यारे! संकल्पमय बनाते हुए दोनों का संस्कार हुआ। संस्कार होने के पश्चात् माता मदालसा और ब्रहे प्रणस्ततम् धनः अप्रेति देवः दोनों मनु वंश में जा पहुंचे। अयोध्या उस समय राष्ट्र था। हमारे यहां ऐसा माना गया है कि भगवान मनु ने सबसे प्रथम अयोध्यापुरी का निर्माण किया। क्योंकि यह जो अयोध्या थी इससे समुद्र कुछ ही दूरी पर था। समुद्रों की आभा में उसको निहारते रहते थे और अण्टा-चक्र नौ द्वार जैसे मानव की पुरी का निर्माण प्रभु ने किया जिसमें आठ चक्र हैं, नौ द्वार हैं। मेरे प्यारे! ऐसे ही अयोध्यापुरी का निर्माण किसी काल में स्वयंभाव मनु ने किया था।

मेरे प्यारे! जब मदालसा मनु कुता में आ गयी तो हर्ष ध्वनियां होने लगीं राष्ट्र सर्वत्र प्रसन्न हो गया। कुछ समय के पश्चात् माता मदालसा के गर्भ स्थल में एक आत्मा का प्रवेश हो गया। तो माता मदालसा एकान्त स्थली पर विद्यमान है। गायत्री छन्दों का पठन-पाठन है और यह कहा करती थी आत्मा मेरे गर्भ स्थल में तेरा प्रवेश हुआ है। तू आत्मा है, ज्ञान स्वरूप है, ज्ञान और प्रयत्न यही तो मेरा गहना है। यह वाक्य जब भी एकान्त स्थली में विद्यमान होती सर्वदा अध्ययन करती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रहती। ऐसा मुझे स्मरण है पुत्रो ! ऐसा ऋषियों ने वर्णन कराया है। उनके साहित्य में भी प्राप्त होता है। जब बाल्य माता के गर्भ से पृथक हुआ तो तीन शब्दों का प्रतिपादन करती बुद्धोसि ,शुद्धोसि, निरंजनोसी यह कहा करती थी माता मदा-लसा लोरियों का पान कराती रहती और यह कहा करती हे आत्मा तू बुद्ध है, शुद्ध है, तू निरंजन है। बुद्ध कहते हैं बुद्धिमान को, तू शुद्ध है और अखण्ड रहने वाली तू आत्मा है। तेरा निधन भी नहीं होता। हे आत्मा तू महान् है। इन तीन शब्दों की व्याख्या करती रहती। क्योंकि यह तीन ही शब्द हैं ज्ञान की प्रतिभा में क्योंकि ज्ञान की आभा में और ज्ञान की भाषा में यह तीन ही शब्द प्रतिभासिद्ध माने गये हैं। निरंजनो-कृताम् देवा: वसु कर्णम् ब्रह्मणे: लोका: ब्रह्मलोकश्चताम् देवम् धन: अप्रति देवः घृति अस्तो: ऐसा कहा करते थे ऋषिवर। मेरे प्यारे ! माता मदालसा ऋषि के शब्दों की पुनरोक्ति करती रहती और यह कहा करती हे आत्मा ! तू सदैव विवेक में रमण करने वाला है। तू विवेकी बन करके इस संसार का उत्थान करने वाला बन। इस प्रकार की आभा सदैव प्रकट करती रहती थी। विचार-विनिमय क्या ? बेटा ! पांच वर्ष का जब ब्रह्मचारी हुआ तो नमस्कार करके बोला हे मातेः। अब हम चले। उन्होंने कहा कहां ? हे माता ! हम तपस्या करने जा रहे हैं क्योंकि ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा तो हमने प्राप्त कर ली है। अब हम तपस्वी बनना चाहते हैं। माता पुलकित हो गयी। आनन्दित होकर यह कहा धन्य है हे बालक ! अब मेरा सौभाग्य महान् बन गया है। मेरी जो इच्छा थी वह बन गई है। तुम तपस्वी बनो। माता मदालसा के तीन सन्तान इसी प्रकार की हुई जिनका नाम प्रवाण, तिलक और दालभ्य था। यह तीन ऋषि माता मदालसा ने स्वेच्छा से उत्पन्न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

किए। जिस माता के त्याग और तप की प्रतिभा रही। प्रवाण और दालभ्य सतोयुग के काल में महान् ब्रह्मवेत्ता कहलाए गए।

विचार क्या ? मेरे प्यारे ! इसको कन्या याग कहते हैं। याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं, कन्या सबसे प्रथम देव लोक में रहता है। देवता उसका पालन करते हैं। उसके पश्चात् वह पितृ लोकों को प्राप्त होती है। पितृ लोकों में जाने के पश्चात् वह याग करती है विद्या का। विद्या का अध्ययन करना, ब्रह्मचरिष्यामि अपने ब्रह्मचर्य को देवलोक में पहुंचाना यह माता वारांगना का कर्त्तव्य बन जाता है। संस्कार होने के पश्चात् वह कन्या पति लोक को प्राप्त होती है और पति लोक को प्राप्त हो करके वह याग करती है। हमारे यहां वेद के ऋषि कहते हैं सन्तान को उपार्जन करने का नाम याग माना है। हमें याग करना है। संसार में जितना भी जीवन का क्रिया-कलाप है उस सर्वत्रता का नाम याग माना गया है। आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूं। आज का विचार विनिमय क्या ? कि हमें बेटा ! अपने जीवन को महान् बनाना है। हमें अपने जीवन को ऊर्ध्वा में पहुंचाना है क्योंकि मेरे प्यारे ! पतिलोकाम् ब्रह्मः, पति लोक को प्राप्त हो करके ब्रह्म का चिन्तन करना है और याग करना है। हमारे ऋषि-मुनियों ने ऊंची-ऊंची उड़ान उड़ी है। एक ही उड़ान नहीं। नाना प्रकार की उड़ान का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहा है।

मेरे प्यारे ! कन्या याग का वर्णन, पुत्र सन्तान उत्पन्न करने का नाम जहां याग है वहां वेद में मन्त्र आते हैं कि जब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मुनिवरो ! जालवी ऋषि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं। यहां गार्ग पथ्य ऋषि एक समय उनके द्वार पर आए। गार्ग ने कहा, महाराज ! आत्मा का लोक क्या है ? उन्होंने कहा आत्मा का लोक पंच महाभूत माना गया है। पंच महाभूत की स्थली में आत्मा रमण करने वाला है। पंच महाभूतों की गुफा में रहने वाला है मेरे प्यारे ! यह जो मानव शरीर है यह पंच महाभूतों की एक गुफा है। इसमें कौन रहता है ? आत्मा रहता है। उसका लोक है। मेरे प्यारे ! ,जैसे कन्या का लोक उसका पितृलोक है, पतिलोक है देवलोक है, उसी प्रकार आत्मा का लोक हमारे यहां पंच महाभूत माना गया है उस आत्मा का कर्म क्या है ? ऋषि कहता है आत्मा का कर्म याग माना गया है। याग होना चाहिए। मेरे प्यारे ! परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि के प्रारम्भ में इस संसार को रचा तो एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में इस संसार का निर्माण किया। मेरे प्यारे प्रभु ने। आत्मा स्वयं उद्‌गाता और ब्रह्मा बन करके यजमान बन करके संसार की रचना हो गयी। आज यह जो संसार हमें दृष्टिपात आ रहा है यह संसार, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरो वाला जो जगत है, नाना पृथ्वियों वाला जो जगत है बेटा ! इस ब्रह्माण्ड की रचना एक यज्ञशाला के सदृश्य उत्पन्न हो गयी। पृथ्वी मानव शरीर को एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में परिणित किया है।

बेटा ! आज का विचार क्या ? हमें अपने उद्देश्यों को जानना चाहिए। मानव के जीवन का उद्देश्य विवेक है, महानता है, ज्ञान है और ज्ञान के पश्चात् विवेक से अपने जीवन को व्यतीत करें। आज के विचार वर्णन करने का अभिप्राय क्या ? मुनिवरो ! मैं माता मदालसा के जीवन की गाथाएं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वर्णन कर रहा था। उनका जीवन कितना महान् था। इसी प्रकार मेरी पुत्रियों को सदैव अपने जीवन को महान् बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की आवश्यकता है। त्याग और तपस्या में अपने जीवन को जितना व्यतीत किया जाता है उतनी ही मुनिवरो ! ज्ञान की आभा उत्पन्न होती रहती है। यह है आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय कि नाना प्रकार के यागों का चलन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहा है जैसे कन्या याग है ऐसे ही गो-मेध याग है, अजय मेध याग है और भी नाना याग जैसे अग्निष्टोम याग, वाजपेयी याग नाना प्रकार के यागों का चयन महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने किया है।

गृहस्थ को स्वर्ग कैसे बना सकते हैं ?

दिनांक ११-१२-१९८१

बेटा ! हमने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि हमारे ऋषि-मुनि ज्ञान और विज्ञान को ले करके अध्ययन करना प्रारम्भ करते थे। मुझे स्मरण आता रहता है, भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में बेटा ! एक परमाणु का जबविभाजन किया गया तो एकही परमाणु में सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण ऋषि-मुनिओं को दृष्टिपात होता रहा है। मेरे प्यारे ! एक ही परमाणु में सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण होना यह एक सर्वत्र बिज्ञान की विवेचना है। और भी बिज्ञान के ऊपर जब अध्ययन करना आरम्भ किया तो बेटा ! यह संसार जो सूक्ष्म से पिण्ड में और यह पिण्ड इस ब्रह्माण्ड में बेटा ! ओत-प्रोत होता रहा है। मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्मरण आता रहा है ब्रह्मचारी कवन्धि ने एक समय यह निर्णय किया कि माता के गर्भ स्थल में केवल एक निन्दु से मानव के शरीर का निर्माण होता है परन्तु उसमें असंख्य चित्रण एक-२ परमाणु में दृष्टिपात होते रहते हैं। तो आज बेटा ! मैं तुम्हें विज्ञान के ऊपर विवेचना करने नहीं आया हूं। आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है ? हम उस परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए हमारे यहां प्रारम्भ से ही यह संसार मानव की आभा में परिणत होता रहा है। मुझे स्मरण आता रहा है बेटा ! जब पति-पत्नी एकान्त स्थली पर विद्यमान होते हैं तो उस समय लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ी जाती है। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज माता अरुणदति जब एकान्त स्थली पर विद्यमान होते तो लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ते रहे हैं। एक समय माता अरुणदति ने यह प्रश्न किया ऋषि से कि महाराज यह जो अन्तरिक्ष में अरुणदति मण्डल है और अरुणदति मण्डल के साथ जो वशिष्ठ मण्डल कहलाता है इसका मानव के जीवन से क्या सम्बन्ध है ? तो मेरे पुत्रा ! हमारे ऋषि मुनि जहां ब्रह्मवेत्ता रहे हैं वहां उनकी विज्ञान में ऊर्ध्वा गति रही है। जहां विज्ञान और अब्रतम् ब्रह्मवेत्ता दोनों का जो समन्वय रहता है यह समाज यह मानव तब ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता है। एक के बिना दूसरा अपंगता में परिणत होता रहा है।

जब माता अरुणदति ने यह प्रश्न किया तो महर्षि वशिष्ठ कहते हैं कि हे देवी ! यह जो अरुणदति और वशिष्ठ मण्डल हैं यह ध्रुव मण्डल से भी ऊर्ध्वागति में रमण करने वाले हैं। अरुणदति मण्डल और वशिष्ठ दोनों की पृथ्वी पर जब छाया आती है तो जिस माता के गर्भस्थल में अष्ट माह का गर्भास्थ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होता है तो इनकी विशेष छाया पहुंचती है और इस छाया के होने के कारण उनका ब्रह्मरन्ध्र से समन्वय रहता है। तो बालक जो माता के गर्भ स्थल में पनप रहा है अरुणदति और वशिष्ठ दोनों मण्डलों की छाया आ रही है तो मुनिवरो ! वह जो आत्मा उस बाल्य की स्थलियों में रमण कर रही है उसका समन्वय बाहरीय चित्त से रहता है। इसीलिए उसका बाहरीय जगत से आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय होता रहता है। वशिष्ठ मुनि कहते हैं कि संसार में जिस माता के गर्भस्थल में अष्ठ माह में सन्तान का जन्म होता है वह संसार में जीवित नहीं रहती। उसके मूल में वशिष्ठ और अरुणदति दोनों की छाया रहती है। तो मेरे पुत्रो ! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं आया हूं। केवल विचार क्या ? माता-पिता, पति-पति एकान्त स्थली में लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ते रहे हैं। आज कोई नवीन वाक्य नहीं है। परन्तु वर्तमान काल तक जब से सृष्टि का प्रारम्भ हुआ क्योंकि प्रत्येक मानव, जो माता-पिता यह चाहते हैं कि हमारा गृह स्वर्ग बनता चला जाए तो बेटा ! स्वर्ग उस काल में बनता है जब माता-पिता के ऊर्ध्वा गति वाले विचार होते हैं। क्योंकि वह विचार विनिमय करते रहते हैं। इन्हीं विचारों को ले करके कल माता मदालसा की चर्चा आ रही थी। माता मदालसा जो विदुषी कहलाती है मेरी पुत्री जो उड़ान उड़ने वाली महान् होती हैं। "ब्रह्मचरिष्यामि" ब्रह्म के ऊपर अपनी विवेचना देने वाली होती हैं। वह सदैव अपनी-अपनी आभा में रमण करती रही हैं। प्रदाण, तिलक और दालभ्य (तीनों महान् ऋषि) भयंकर वन में तपस्या जब करने लगे उस समय माता मदालसा की यह इच्छा हुई कि वह बाल्य मेरे गर्भ से जन्म जिन्होंने लिया है, वह वास्तव में तपस्वी बने हैं या वनचर, वैसे ही वनों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

में अपने जीवन को व्यतीत कर रहे हैं। तो मुझे स्मरण है माता मदालसा ने अपने आसन से गमन किया। भ्रमण करते हुए वह वनों में जा पहुंची, जहां वह बालक तपस्या कर रहे थे। एक पंक्ति में विद्यमान हो करके, तपस्वी बन करके प्रभु से ध्यानावस्थित हो रहे थे प्रभु के [आंगन में। माता मदालसा जैसे ही उनके द्वार पर पहुंची, कुछ समय पश्चात वह उपरामता को प्राप्त हुए। माता मदालसा के चरणों को स्पर्श किया और माता से कहा, हे मातेश्वरी! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा हे पुत्रश्चयताम् ब्रहे:। मेरी इच्छा यह बनी कि मैं अपने बाल्यों को दृष्टिपात करना चाहती हूं। वह बाल्य उत्तर देते हैं हे माता! तेरे बाल्यपन का उद्देश्य पूर्ण हो गया है। अब हम परमात्मा की गोद में हैं। क्योंकि परमात्मा के राष्ट्र से हम दूरी नहीं हो सकते। हम माता तेरे से दूरी हो सकते हैं परन्तु प्रभु जो सर्वत्र माता-पिता के रूप में गमन कर रहा है, एक एक परमाणुमात्र में वह गति कर रहा है हम उस राष्ट्र से दूरी नहीं हो सकते। हे मातेश्वरी! आपका कर्त्तव्य पूर्ण हो गया है। अब आप अपने आसन पर जाइए क्योंकि आपने हमें इस योग्य बनाया है। आपने हमारा पालन किया है। अब प्रभु के राष्ट्र में हम विद्यमान हैं क्योंकि वह हमारा पालन करने वाला है। माता मदालसा इन वाक्यों को श्रवण करके हृदय में आनन्दवत होने लगी और कहा धन्य है हे बाल्य! मैं यही चाहती थी कि तुम्हारे में इतना ज्ञान हो, प्रभु में तुम्हें इतना अटूट विश्वास होना चाहिए। यह जो संसार दृष्टिपात आ रहा है इससे तुम्हारा जीवन उपरामता को प्राप्त होना चाहिए।

परन्तु माता मदालसा ने यह कहा हे बालक तुम तपस्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्य: करते हो ? अब जो मैंने तुम्हें दृष्टिपात किया कि तुम ध्यानावस्थित हो रहे थे किस वस्तु में तुम ध्यानावस्थित होते हो ? वह कौन सी वस्तु है जिसमें ध्यानावस्थित हाने से तुम्हारे मन की प्रवृत्ति एक महत्ता में परिणत हो जाती है ? उनमें से ज्येष्ठ बाल्य प्रवाण ने कहा, हे माता ! हम जो ध्यानावस्थित होते हैं वह जिससे हमें यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है, मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है इनमें दो वस्तुओं का विभाजन होता है और उन दोनों वस्तुओं को जो विभक्त हो गई हैं हम उनको एक सूत्र में लाना चाहते हैं। वह दोनों वस्तु कौन सी हैं ? जो विभक्त हो गई हैं और ध्यानावस्थित होने वाले ध्यान में उन दोनों को एक सूत्र में लाते हैं। वेद का ऋषि कहता है, प्रवाण ने कहा, वह बाल्य कहता है माता से, हे माता ! हम ध्यानावस्थित होते हैं, जिन वस्तुओं का विभाजन हो गया है। विभक्त करने वाली और विभाजन होने वाली दो ही प्रतिक्रियाएं सर्वत्र ब्रह्माण्ड में होती रहती हैं। आज जब हम दृष्टिपात करते हैं माता के गर्भ में, हम वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश करते हैं जो वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है जब पृथ्वी के गर्भ में हम प्रवेश करते हैं तो मन और प्राण हमें दृष्टिपात होते हैं जो सामान्य प्राण इस पृथ्वी के गर्भ में रहता है जो प्राण अप्रतम तेज के द्वारा, सूर्य की नाना किरणों के द्वारा पदार्थों को निर्माणित करता रहता है कोई रस प्रदान कर रहा है। कोई रस को विभक्त कर रहा है तो वह मन और प्राण ही मुझे दृष्टिपात आते हैं। मेरे प्यारे ! ऋषि कहता है कि इसी प्रकार हमारे मानव शरीर में यह जो नाना प्रकार की विभक्त क्रियाएं दृष्टिपात आती हैं, कहीं माता के रूप में, कहीं पिता के रूप में, कहीं पुत्री के रूप में, कहीं पत्नी के रूप में, यह जो संसार विभक्त होता हुआ, तो नाना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकार केलोक-लोकान्तरों में गति करने वाली प्रतिक्रिया हो रही है, हे मातेश्वरी ! जब हम यहां से ध्यानावस्थित हो करके इन लोक-लोकान्तरों को यात्रा करते हैं तो उस समय हमें प्रत्येक लोक में एक सी क्रिया दृष्टिपात होती है। यह जो संसार है यह जो जगत् है यह दो वस्तुओं से विभक्त होने वाले तत्त्वों के यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है। हे मातेश्वरी ! हम जो अपने में ध्यानावस्थित होते हैं तो हम इस मानव के शरीर में दो वस्तुओं का विभाजन हो गया है। एक मन है और दूसरे को हम प्राण कहते हैं। इन दोनों रूपों में यह शरीर दृष्टिपात आता है। जब इस मानव शरीर की प्रतिक्रिया मन के साथ होती है तो यह प्रकृतिवाद एक महत्ता में दृष्टिपात आता है जब किसी मानव की प्रवृत्तियां प्राण के साथ होती हैं तो एक सूत्र में दृष्टिपात आता है। हम उसी सूत्र में सर्वत्रता में पिरोए हुए हैं जो माला में एक धागा होता है और वह धागा उस माला को स्थिर किए रहता है क्योंकि माला में यदि धागा नहीं होगा तो यह मनके बिखर जाते हैं। इस प्रकार हे मातेश्वरी ! यह जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है। नाना प्रकार की निहारिकाओं वाला, नाना लोक-लोकान्तरों वाला जो ब्रह्माण्ड है, एक-एक आकाश गंगा में अनन्त सूर्य दृष्टिपात आते हैं, एक ही आकाश गंगा में अनन्त ध्रुव मण्डल दृष्टिपात आते हैं, बृहस्पति दृष्टिपात आते हैं एक-एक लोक को तपाने के लिए बहत्तर-बहत्तर सूर्य दृष्टिपात आते हैं। आज हम उस परमात्मा की जो सृष्टि है उसको अपने में तुलनात्मक दृष्टिपात नहीं कर सकते। हम परिचय देते रहते हैं, विचारते रहते हैं। तो प्रवाण ने कहा 'हे माता ! आप क्या आश्चर्य करोगी जब ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने के लिए हम तत्पर होते हैं एक सूत्र दृष्टि-पात आता है और उसी सूत्र में नाना लोक-लोकान्तर क्या ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यह जितनी निहारिकाएं हमें दृष्टिपात आती हैं, एक सूत्र में पिरोई हुई दृष्टिपात आती हैं और वह जो सूत्र है उसी सूत्र में हमारा यह जो मानव शरीर है, नाना अंग हैं यह जो निमाणित हो रहे हैं वह भी एक सूत्र में दृष्टिपात आते हैं। जैसे माला है, माला में मनके हैं : मनके एक सूत्र में पिरोए होने से यह माला कहलाती है इसी प्रकार यह नाना निहारकाएं, नाना पृथ्वीयां एक सूत्र में पिरोने से यह सृष्टि दृष्टिपात आती है। यह सृष्टि है, यह माला है, इसी प्रकारहमारा यह मानव शरीर एक प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है हे मातेश्वरी ! यह जो प्राणसूत्र है इस प्राण सूत्र को हम जान करके यह जो बिखरे हुए मनके हैं उसको हम प्राण रूपी सूत्र में पिरोने का प्रयास करते हैं। वही हम ध्यान में दृष्टिपात करते हैं।

माता मदालसा ने अपने को धन्य स्वीकार किया और यह कहा कि धन्य है हे बालक ! ब्रह्मचरिष्यामि, तुम ब्रह्मचर्य के क्या अर्थ स्वीकार करते हो ? मेरे प्यारे ! प्रवाण ने शिलभ्य से कहा, हे शिलभ्य ! इसका उत्तर तुम दो। मुनिवरो ! ब्रह्मचारी शिलभ्य ने कहा, हे माता ! "ब्रह्मचरिष्यामी" ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को, चरि कहते हैं प्रकृति को। 'ब्रह्म और चरि' दो ही शब्द संसार में हैं। ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वागति बनाने वाला देवता बनता है, ध्रुवा गति बनाने वाला पितृ यागी बनता है, वह पितृ याग कर रहा है। वहां सन्तान का नामोउपार्जन होता है और वहां देवताओं की सभा में जाना होता है। तो इसीलिए ब्रह्मचर्य के दो ही अर्थ हैं। चरि कहते हैं प्रकृति को और ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को। ब्रह्म और चरि दोनों का समन्वय होता है तो यह संसार रच जाता है। संसार की उत्पत्ति हो जाती है। ब्रह्म और चरि के सन्निधान मात्र से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ही संसार अपना-अपना कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। हे माता ! हम इतना ही जान पाए हैं ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को जो हमें दृष्टिपात आ रही है। लोक लोकान्तरों से ले करके जो भी मानव के नेत्रों से दृष्टिपात आता है उसका नाम प्रकृति है और जो आभा म रमण करने वाला, जो चेतना में, तरंगों में, आभा में रमण करने वाला है वह ब्रह्म कहलाता है। दोनों का सन्निधान, दोनों का मिलान होते ही इस संसार की रचना होती है। ब्रह्म और चरि दोनों शब्दों का निर्माण हो जाता है। हम ब्रह्म और चरि दोनों के ऊपर विचार-विनिमय करते चले जाएं। माता पुन अपने में धन्य स्वीकार करने लगी। उन्होंने कहा, धन्य है हे बाल्य ! "ब्रह्मचरिष्यामि" तुम ब्रह्मचर्य के इतने अर्थों को जानते हो उतना सुसज्जित है, महान् है, यही दर्शनकारों ने इसका वर्णन किया है।

आगे मदालसा ने अपना एक प्रश्न और किया. हे बालक! संसार में यह प्राण सूत्र क्या है ? तो मेरे प्यारे ! माता मदालसा ने यह प्रश्न जब ब्रह्मचारियों से कहा तो प्रवाण ने दालभ्य से कहा इसका उत्तर तुम दो। मुनिवरो ! दालभ्य ने कहा हे माता ! यह प्राण सूत्र वह है जिसमें प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक परमाणु पिरोया हुआ है। मुझे स्मरण है जब हम ध्यानावस्थित होते हैं तो हम एक परमाणुवाद में गति करते हैं तो यह परमाणुवाद भी गति कर रहा है। सूर्य भी गति कर रहा है और लोक भी गति कर रहा है, निहारिका भी गति कर रही है और यह जो पृथ्वी-मण्डल है यह भी गति कर रहा है। इन सबमें प्राण सूत्र ही दृष्टिपात आता है। प्राण सूत्र क्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है ? एक मानव सुषप्ति में चला जाता है। सुषुप्ति में जाने के पश्चात् प्राण सूत्र ही रमण कर रहा है। प्राण सूत्र ही मानवको जीवन देता है। मन भी अपनी सामान्य अवस्था में परिणत हो जाता है परन्तु मनस्तत्व ऐसा है जो सूत्र में पिरोया हुआहोने के नाते वह प्राण सूत्र कहलाता है। प्राण सूत्र क्या है? प्रीति का नाम प्राण सूत्र है। जहां प्रीति शब्द आता है वहीं प्राण सूत्र दृष्टिपात आता है। यह संसार प्राण सूत्र में पिरोया हुआ है। एक-दूसरे में मानव पिरोया हुआ दृष्टिपात सा आता है । जैसे पत्नी-पति की सहायक है । पुत्र पिता का सहायक है । और पति पत्नी का सहायक है । पिता पुत्र का सहायक वन रहा है। एक लोक दूसरे का सहायक बना हुआ है। यह सब प्राण सूत्र कहलाता है। मुनिवरो ! चन्द्रमा अपनी आभा में अमृत की वृष्टि कर रहा है वह सूर्य का सूत्र कहलाता है। सूर्य से उसे सहायता प्राप्त हो रही है। मानव-मानव का सहायक बना हुआ है। इस पृथ्वी मण्डल पर जितने बेटा ! यह प्राणी हैं एक प्राणी दूसरे का सहायक बन रहा है और बनता हुआ एक चक्रचल रहा है यह सब प्राण सूत्र कहलाता है। यह उत्तर देने के पश्चात् कहा हे मातेश्वरी ! यह संसार जितना दृष्टिपात आता है यह सब प्राण सूत्र है। प्राण में ही एक-एक परमाणु अणु पिरोया हुआ है। यह उत्तर पाने के पश्चात् मदालसा मौन हो गयी और मदालसा ने कहा धन्य है! हेबालक मेराजीवन सफल होगया है। मैं यही चाहती थी कि मेरे गर्भ से ऐसे बालक का जन्म हो जिनके जीवन में सदैव प्राण की आभा निहित रहे। माता मदालसा जब गमन करने लगी तो मुनिवरो ! उन तीनों पुत्रों ने उनके चरणों को स्पर्श किया। उन्हें आशीर्वाद दे करके वहां से उनका गमन हुआ। अपने गृह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

में प्रवेश किया। अयोध्यापुरी में आ गयी। रात्रि और दिवस सदैव इसी वाक्य का चिन्तन करती रही कि हमें प्राण सूत्र को जानना है।

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या? मैं यह उच्चारण कर रहा था कि संसार में यह जो माता का जीवन है, यह एक ऐसा जीवन है यदि वह अपने कर्त्तव्य का पालन करती रहती है तो वह ममतामयी माता बन जाती है। वास्तव में माता क्या है? माता का शब्द ही वैदिक साहित्य में महत्वयुक्त माना गया है। महत्वदायक इसलिए माना गया है क्योंकि परमात्मा के लिए माता और पिता दोनों आता है। इसी प्रकार माता जब अपने में तपती रहती है, अपने को तपायमान करती रहती है, वह ममतामयी बन जाती है। उस सूत्र में अपने को स्वीकार करने लगती है कि वास्तव में मेरे जीवन का जो कर्त्तव्य है वह पूर्ण हो गया है। मैं कोई विशेष चर्चा करने नहीं आया हूं। वास्तव में मैं तो प्राण सूत्रों में चला गया। यह तो विशाल वन की चर्चाएं हैं। आज हम उच्चारण कर रहे थे कि पति-पत्नी जब एकान्त स्थली पर विद्यमान होते हैं वहां बेटा! वह परमात्मा का चिन्तन करते हैं। ऊंची-ऊंची उड़ान उड़ते हैं। निहारिका में चले जाते हैं। मेरे प्यारे! उसके अर्थों में, उसके गर्भ में मानवीय जीवन निहित रहता है। मैंने अभी-२ कहा कि संसार एक दूसरे का सहायक बना हुआ है। तो मुनिवरो! अरुणदति और वशिष्ठ मण्डल की चर्चाएं चल रहीं थी और वह चर्चाएं क्या कह रही थीं? मानव का जीवन लोक-लोकान्तरों से कितना समन्वय रहता है? कितना उनसे सम्बन्ध है? नाना पृथ्वियां गति करती हैं उस मानव के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मस्तिष्क में सूक्ष्म तन्तुओं में, नाना लोक-लोकान्तरों को विवेचना उसके अंकुर इस मानव शरीर में विद्यमान होते हैं। उस के पश्चात् ही उनके ऊपर वह विचार पाता है। यदि आन्तरिक जगत में संस्कार नहीं होंगे, आन्तरिक जगत में अंकुर नहीं होंगे लोकों के, वह लोकों की उड़ान कदापि उड़ नहीं पाता। इसीलिए वह उड़ता रहता है, विचारता रहता है, निहारता रहता है। समन्वय करता रहता वह अपने जीवन का। यह है बेटा ! आज का वाक्य ।

हमें उस देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए इस संसार सागर से पार होना है जिसके ऊपर हम सदैव विचार-विनिमय करते रहते हैं। इसके ऊपर अनुसन्धान करना हमारा कर्त्तव्य रहता है। गृह में जब प्रवेश होता है तो वह निहारता रहता है संसार रूपी जगत को। वह अपने में शृंगारित होता रहता है। प्रकृति के शृंगार को दृष्टिपात करके अपने को वह सजातीय बनाता रहता है। विचार विनिमय क्या? आज मैं तुम्हें यह विचार देने जा रहा हूं हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए उसके ज्ञान और बिज्ञान को [जानते हुए इस संसारसागर से पार हो जाएं। मेरे प्यारे ! हमारे यहां प्रत्येक मानव ऊंची-२ उड़ान उड़ता रहा है क्योंकि ब्रह्म की जिसने उड़ान उड़ी है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वह विज्ञान की उड़ान भी उड़ रहा है। विज्ञान की जिसने उड़ान उड़ी है वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता हुआ अपना अन्तरात्मा को जानता हुआ अपने को वह सजातीय स्वीकार करता है। जो मानव यहां देवता बनता है। वह मानव ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ इन्द्रियों को वह सजातीय बनाता है। प्रत्येक इन्द्रियों को वह धर्म में पिरो देता है। मानव की इन्द्रिया जब धर्म में परिणत हो जाती हैं, अपने अपने कार्यों में रत हो जाती हैं, संकीर्णता उनमें नहीं होती वह व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश हो जाती हैं वह बेटा ! धर्म के मर्म को जानता है।

यह है बेटा ! आज का वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा, शेष चर्चाएं कल प्रकट करेंगे। आज का यह वाक्य क्या कह रहा है ? कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुण-गान गाते हुए अपने जीवन को महान् बनाना है। माता-पिता अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहते हैं तो उन्हें ऊंची उड़ान उड़नी चाहिए। वे लोकों की उड़ान, दर्शनों की उड़ान, आत्मा की उड़ान, परमपिता परमात्मा के महान् क्षेत्र में जाने का प्रयास करें। यह है बेटा ! आज का वाक्य। आज का वाक्य क्या कह रहा है कि हम देव की प्रतिभा को जानने का प्रयास करें। देव कितना वैज्ञानिक है ? वह मेरा प्रभु जिसने इस संसार को रचा है, जीवन की रचना की है। जिसने ब्रह्माण्ड को रचा है उसको जानने के लिए उसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के राष्ट्र में हम गमन कर रहे हैं। मानव के राष्ट्र से मानव दूरी हो सकता है, परन्तु प्रभु का राष्ट्र इतना नितान्त है कि उससे हम दूरी नहीं हो सकते। इसीलिए प्रत्येक मानव को विचार महान बनाते हुए, गृह में प्रवेश करते हुए, गृह की आभा को जानना, गृह, उपगृह दोनों को जानना हमारा कर्त्तव्य है। आज का वाक्य समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(बुलन्दशहर), श्री करम सिंह दान्दूपुर, श्री गजेन्द्र सिंह बड़ौत श्री हरपाल सिंह भाल (मुजफ्फरनगर), श्री मियानन्द त्यागी सहारनपुर, श्री अवनीश कुमार दतियाना, श्री जीत सिंह राणा धुन्दली, श्री महावीर सिंह आर्य मलकपुर, श्री गजेन्द्र सिंह मुजफ्फरनगर, श्री दीप चन्द बसोया फफुन्डा, श्री राम निवास त्यागी माछरा, श्री दिग्विजय सिंह सिकन्द्राबाद, श्री धिरेन्द्र कुमार बूडपुर जट्ट, मास्टर राम चर्ण सिंह मारगा, श्रीमती सुशीला आर्य जींद, श्रीमती चन्द्रबती जींद, श्रीमती विद्यावती चितसोना, ज्ञानेन्द्र सिंह मेरठ शहर, श्रीमती अंजना नई दिल्ली-१७, श्री जयदेव जावा बरवाला, श्री हुकम चन्द अग्रवाल श्रीनगर दिल्ली, श्री बनारसी दास गुप्ता श्रीनगर दिल्ली, श्री वीरभान शर्मा श्रीनगर दिल्ली, श्री बैजनाथ अग्रवाल नई दिल्ली-२६।

आगामी प्रोग्राम

११-१२ अप्रैल – ग्राम गवाली खेड़ा, जिला मेरठ

१६-१८ – आर्य समाज पनवाड़ी, सिविल लाईन, बुदायूं।

५-६-७ मई ग्राम भविसा, जिला मुजफ्फरनगर।

मोतियों की माला

लेखक : श्री मन्साराम जी गुप्ता निजामाबाद

क) प्रभो ! नाम तेरे सैंकड़ों हैं यह बता।
हम तुम्हें आवाज़ दें किस नाम से ।

ख) जिस व्यक्ति से उसके माता-पिता प्रसन्न हैं। प्रभु भी उससे प्रसन्न हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ग) बालक माता के दोष के कारण चरित्रहीन, पिता के दोष के कारण मूर्ख, वंश के दोष के कारण कायर और स्वयं के दोष के कारण दरिद्र होता है।

घ) मनुष्य की तीन सबसे बड़ी उपाधियां हैं – शहीद-वीर-संत।

ङ) दान रूपी बाण से आपने लोभ रूपी शत्रु को तो मारा, परन्तु दान देने का अभिमान रूपी शत्रु उत्पन्न हो गया।

च) जो अपने को नहीं सुधारना चाहे उसे कोई भी नहीं सुधार सकता।

छ) जो आदमी यह सोचता है कि मैं दूसरों के बिना जी सकता हूं, वह गलती पर है और जो आदमी यह सोचता है कि दूसरे मेरे बिना नहीं जी सकते वह और भी अधिक गलती पर है

ज) अपराध की जननी है भूख। भूख अन्न की हो, पैसे की हो, सुन्दरी की हो अथवा अधिकार की। किसी भी प्रकार की हो सकती है।

झ) किस रावण की बाहें काटूं,
किस लङ्का को आग लगाऊं,
घर-घर रावण, घर-घर लङ्का,
इतने राम कहां से लाऊं ॥

बैजनाथ सहगल
प्रकाशन मन्त्री

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri